ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 77-79

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

महादेवी वर्मा के साहित्य में मानसिक विकलांगता

डॉ0 अनिता सिंह

समीक्षक / उपन्यासकार, बिलासपुर (छत्तीसगढ़), भारत

Received-15.04.2024, Revised-21.04.2024, Accepted-25.04.2024 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांश: *विकलांगता समाज का एक हिस्सा है और इस विषय पर साहित्य, पत्रकारिता मीडिया एवं फिल्मों में भी विकलांग चेतना का दर्शन होता है। विकलांगता बिमारी नहीं बल्कि एक हीन मानसिकता है, जिसने इस समाज को ही नहीं बल्कि समाज में रह रहे लोगों को भी ग्रसित कर रखा हैं। जब व्यक्ति मानसिक विकलांगता से ग्रसित हो जाता है तब वह समाज को भी त्रसित करने से पीछे नहीं हटता है। जहाँ शारीरिक विकलांगता एक प्राकृतिक सत्य है वहीं मानसिक विकलांगता व्यक्ति की तुच्छ सोच का परिणाम है। आधुनिक रहन–सहन, भौतिक साधन और बाजारवाद के इस युग में मानसिक विकलांगता लोगों में दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यदि हिन्दी साहित्य पर प्रकाश डालें तो विकलांगता पर आधारित अनेक कहानी, संस्मरण, उपन्यास तथा नाटक हैं जिसमें किसी न किसी रूप में विकलांगता को प्रस्तुत किया गया है। कहीं उनके पात्र श्रवण बाधित, दृष्टि बाधित, अस्थि बाधित, शारीरिक विकलांग तो कहीं मानसिक रूप से विकलांग हैं। आधुनिक हिन्दी के जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों में राजाओं के मानसिक रूप से विकलांगता की चर्चा की गई है, जो अपनी प्रजा पर जुल्म ढाते हैं, उनका शोषण करते हैं।*

कुंजीभूत शब्द– विकलांगता समाज, साहित्य, पत्रकारिता मीडिया, विकलांग चेतना, हीन मानसिकता, प्राकृतिक सत्य, रहन–सहन।

छायावाद की स्तम्भ महादेवी वर्मा के संस्मरण, रेखाचित्र एवं निबंधों पर दृष्टिपात करते हैं तो सर्वत्र मानव जाति की मानसिक विकलांगता की झलक मिलती है। महादेवी का प्रथम संस्मरण भक्तिन मानव समाज की मानसिक विकलांगता पर करारा प्रहार करता है। एक बार लगान अदा न करने पर जमींदार द्वारा पूरे दिन कड़ी धूप में खड़ा रखना। यह अपमान भक्तिन के सबसे बड़ा कलंक बन जाता अतः दूसरे ही दिन वह गांव छोड़ देती है जो पुरूष समाज की मानसिक विद्रुपता का ही परिणाम है।

महादेवी का एक अन्य संस्मरण ''चीनी फेरीवाला'' है जिसमें फेरीवाले चीनी की माँ और बहिन का जो चित्र लेखिका ने अंकित किया है वह समस्त मानवता को आत्मग्लानि से भर देने की शक्ति रखता है। चीनी बालक की विमाता किस प्रकार बालक की बहिन के सुकोमल कौमार्य से व्यापार करती है और उसे अपनी वासना–पूर्ति और लौकिक भोग का उपादान बना डालती है। जहाँ यह कर्म स्वार्थ से अंधे दानव बने मानव के मानसिक विकलांगता का परिचय देता है, वहीं करूणार्द्र मानव–मन के लिए उतना ही हृदय विदारक प्रसंग भी।

जीवन पथ पर पराजित बिबिया का जीवन वृत्त भी काँटों से परिपूर्ण है तथा बिबिया की माँ का भी जीवन पथ सुगम नहीं कहा जा सकता। मद्यप और झगडालू पति के अत्याचार इतने असहनीय हो गए थे कि उसे इस लोक में रहना पसंद नहीं आया। माँ–बाप के अभाव में बिबिया भाई–भौजाई की छत्र छाया में पलकर बड़ी हुई। गोरे रंग और हँसमुख स्वभाव वाली बिबिया धोबिनों में सबसे अभागिन धोबिन थी। बिबिया का विवाह–संबंध उसके जन्म के पूर्व ही तय हो गया था। पाँचवें वर्ष में व्याह भी हो गया परन्तु गौने के पहले ही वर की मृत्यु ने उस संबंध को तोड़कर जोड़ने वाले का प्रयत्न निष्फल कर दिया। निम्न वर्ग की स्त्री का अकेले रहना सामाजिक अपराध है। इस विचार से बिबिया के भाई ने शहर का धोबी ढुंढकर शुभ दिन में बिबिया को नई ससुराल में बिदा कर दिया।

ससुराल जाने के कुछ महीने बाद ही वह वापस भाई के घर आ जाती है और पता चलता है कि उसके घर वाले ने उसे निकाल दिया और वह भी उसके चरित्र के लिए यह निर्वासन मिला था। बिबिया जैसी परिश्रमी स्त्री के लिए चरित्र का अपमान असहनीय हो गया। रमई के घर जाकर बिबिया ने गृहस्थी की व्यवस्था के लिए अथक प्रयत्न किया। उसका पति रमई पक्का जुआरी और शराबी था। रमई पहले ही दिन बहुत रात गए नशे में धुत लड़खड़ाता हुआ घर पहुँचा और बिबिया को देखकर घृणास्पद बातें करने लगा। क्रोध न रोक सकने के कारण बिबिया ने चिमटा उठाकर उस पर फेंक दिया। बचने के प्रयास में रमई औंधे मुँह गिर पड़ा और बिबिया ने अंधेरी कोठरी में घुसकर द्वार बंद कर लिया। सुबह तब वह बाहर निकली जब घर वाला जा चुका था। फिर तो यह क्रम प्रतिदिन चलने लगा। बिबिया शराबी और जुआरी पति का अत्याचार सहने लगी, लेकिन हद तो तब हो गई जब उसके जुआरी साथियों ने जुए में बिबिया को दाँव पर रखने की बात कही और इस बात का उसके साथियों ने मुक्त कंठ से समर्थन किया। रमई बिबिया को रखने के लिए प्रस्तुत भी हो गया पर न जाने उसे चिमटा स्मरण हो आया था कि वह रूक गया। बहाना बनाया– आज तो रूपया गांठ में है न होगा तो मेहरारू ओर किस दिन के लिए होती है। 'महादेवी वर्मा ने यहाँ पुरूषों की निम्न स्तरीय विक्षिप्त मानसिकता परिचय दिया है – ''शराबी होश में आने पर मनुष्य बन जाता है पर जुआरी कभी होश में आता ही नहीं, अतः उसके संबंध में मनुष्य बनने का प्रश्न कभी उठता ही नहीं।'[1] इससे तो यही लगता है कि हमारे भारतीय समाज में महाभारत काल से लेकर आज तक मानसिक विकलांगता का स्वरूप देखने को मिलता है।

बिबिया जैसी सच्चरित्र और स्वाभिमानी स्त्री के लिए 'आग में घी' के समान हो गया– 'दुर्भाग्य से उसने एक दिन करीम मियां को अपने द्वार पर देख लिया। बस फिर क्या था चाकू निकालकर भौहें टेढ़ी कर उसने उन्हें बता दिया कि रमई की ऐसी हरकत करने पर वह उन दोनों के पेट में यही चाकू भोंक देगी। फिर चाहे उसे कितना ही कठोर दंड क्यों न मिले पर वह ऐसा करेगी अवश्य। वह ऐसी गाय–बछिया नहीं है, जिसे कसाई के हाथ बेच दिया जावे, चाहे वैतरणी पार उतरने के लिए महाब्राह्मण को दान कर दिया जावे।'[2] बिबिया के मुंह में अपशब्द और जानलेवा बात सुनकर करीम मियाँ तो सकते में आ गए और रमई को सचेत करते हुए बोले – घर में

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

कसाई बिठाकर चैन की नींद सो रहे हो। सम्भलकर रहना तुम्हारी घर वाली तो बात–बात पर छुरा–चाकू दिखाती है। रमई के जुआरी दोस्तों ने भी इस बात का समर्थन किया तथा सभी ने सिर हिला हिलाकर बिबिया के सतीत्व पर ऊँगली उठाई। सबकी बात सुनकर रमई भी लज्जा और ग्लानि से भर गया। उसकी घरवाली सती सावित्री नहीं है। उससे भी दुर्वह बात यह थी कि जो स्त्री चाकू निकालते नहीं डरती, वह क्या उसके उपयोग से डरेगी? रमई बिबिया से इतना डर गया कि अंत में उसे यह निर्णय करना पड़ा कि वह उसे घर में नहीं रखेगा और पंचों ने भी यही फैसला किया कि क्योंकि वे सभी रमई के समानधर्मी थे। निरूपाय होकर बिबिया अपने भाई के घर लौट आई।

व्यक्ति की सोच इतनी निकृष्ट हो सकती है कि मानसिक विकलांगता की सारी सीमा ही पार कर गई, परन्तु यह मानसिक विकलांगता यही समाप्त नहीं होती। बिबिया का भाई भी अपनी मनसिक विकलांगता का परिचय देते हुए कुछ समय बाद बिबिया का घर पुनः पाँच बच्चों के बाप के साथ बसा देता है, क्योंकि भाई को यह भय बना हुआ कि युवती बहन को घर में रखना आपत्ति मोल लेने के तरह है।

बिबिया का दुर्भाग्य कहें या पुरूष समाज की मानसिक विकलांगता कि बिबिया के चरित्र पर फिर से लाँछन लगाकर लात, घुँसा थप्पड़, लाठी आदि का सुविधानुसार प्रयोग कर बिबिया को पीटकर घर से बाहर धकेल दिया गया। गाँव के रजक समाज को बिबिया के चरित्र पर संदेह था क्योंकि उसने सफाई में कुछ कहा नहीं, इसलिए समाज के पंच सरपंच ने अपनी मानसिक विकलांगता का परिचय देते हुए कभी उसके जीवन के सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि चरित्र को जब दाँव पर लगा दिया तब वह दुखिया नारी गंगा के अटल गंभीर और शीतल जल में ही चिर विश्राम पा सकी।

महादेवी के संस्मरणात्मक रेखाचित्र 'बालिका माँ' में मातृ–पितृ हीन बाल विधवा एवं वात्सल्यमयी भारतीय नारी की करूण कथा के साथ साथ समाज की मानसिक विकृति का भी चित्रण किया है। बालिका जो ग्यारह वर्ष की अवस्था में विधवा हो जाती है तत्पश्चात 'बालिका माँ' बनती है। परन्तु अपने बच्चे को अपने से अलग नहीं करना चाहती है। जिसे लेकर उसके घर में हाहाकार मचा हुआ है और महादेवी जी को इसलिए बुलाया जाता है कि वह इसे समझाएं ताकि हम लोग इस बच्चे को इससे अलग कर इस कलंक से मुक्ति पा सकें। महादेवीजी लिखती हैं – ''यदि यह न कहूं कि मेरा शरीर सिहर उठा था, पैर अवसन्न हो रहे थे और माथे पर पसीने की बूंदे आ गई थी तो असत्य कहना होगा। सामाजिक विकृति का बौद्धिक निरूपण मैनें अनेक बार किया है पर जीवन की इस विभीषिका से मेरा यही पहला साक्षात था।''[3] सामाजिक विकृति का ऐसा रूप और कहाँ देखने को मिलेगा? इसकी माँ ने समाज के क्रुर व्यंग्य से बचने के लिए नरक में अज्ञातवास कर अकेले यंत्रणा से छटपटाकर ही इसे पाया है, परन्तु किसी को यह चिंता नहीं है, कि यह कैसे जीवित रहेगा? चिंता है तो केवल इस बात की कि कैसे अपने सिर बिना हत्या का भार लिए ही इससे मुक्ति मिल जाय। तत्पश्चात महादेवी ने उस बालिका को देखने की इच्छा प्रकट की। उत्तर में बुआ ने दलान की तरफ इशारा किया। पहले तो महादेवी कुछ दिखाई ही नहीं दिया, पर दीया जलाने पर उन्होंने वहाँ पर वेदना और करूणा से परिपूर्ण दृश्य देखा– ''स्मरण नहीं आता, वैसी करूणा कहीं और देखी है। खाट पर बिछी मैली दरी, सहस्त्रों सिकुड़न भरी मलीन चादर और तेल के धब्बे वाले तकिये के साथ मैनें जिस दयनीय मूर्ति से साक्षात किया उसका ठीक चित्र दे सकना संभव नहीं है। वह अट्ठारह वर्ष से अधिक की नहीं जान पड़ती थी, दुर्बल और असहाय जैसी, सूखे होठ वालें, साँवले पर रक्तहीन से पीले मुख में आंखे ऐसी जल रही थी, जैसे तेलहीन दीपक की बत्ती।[4]

व्यभिचार से उत्पन्न संतान की माँ का समाज अवहेलना करता है परन्तु उसके इस अवस्था का जिम्मेदार यह विकृत समाज ही है। अपने अकाल वैधव्य के लिए वह दोषी नहीं ठहरायी जा सकती। उसे किसी ने धोखा दिया, इसका उत्तरदायित्व भी उस पर नहीं रखा जा सकता, पर उसकी आत्मा का जो अंश, हृदय का जो खंड उसके सामने हैं, उसके जीवन–मरण के लिए केवल वही उत्तरदायी है। कोई पुरूष यदि उसे पत्नी नहीं स्वीकार करता तो केवल इसी मिथ्या के आधार पर वह अपने जीवन के इस सत्य को, अपने बालक को अस्वीकार कर देगी? ''विकृत समाज चाहे उसे कोई परिचयात्मक विशेषण न दे परन्तु अपने बालक के सामने तो वह गरिमामयी 'जननी' की संज्ञा ही पाती रहेगी। इसी कर्तव्य को अस्वीकार करने का यह प्रबंध कर रही है। किसलिए? 'केवल इसलिए कि या तो उस बंधक समाज में फिर लौटकर गंगा–स्नान कर, ब्रत–उपवास, पूजा–पाठ आदि के द्वारा सती विधवा का स्वांग भरती हुई भूलों की सुविधा पा सके या किसी विधवा आश्रम में पशु के समान नीलाम पर चढकर कभी नीची, कभी उँची बोली पर बिके अन्यथा एक–एक बूंद विषय पीकर धीरे–धीरे प्राण दे।''[5]

इस संस्मरणात्मक रेखाचित्र में महादेवी जी ने मानव समाज के विकृत सोच का परिचय तो दिया ही है साथ ही वेश्या की समस्या पर भी प्रकाश डाला है। स्त्री को परिस्थितियों के आगे कितना विवश कर दिया जाता है कि वह न चाहते हुए भी सब कुछ कर गुजरने को तेयार हो जाती है। यदि ये समाज के विकृत ठेकेदार सोच बदल लें तो वेश्या की समस्या पैदा ही न हो। परन्तु समाज में यदि ऐसे मानसिक विकलांग लोग रहेंगे तो समाज को कभी सुधारा नहीं जा सकता और ये समाज के मानसिक विकलांग ठेकेदार तब भी थे और अब भी हैं। यह पुरुश समाज की मानसिक विकलांगता का ही परिणाम है कि वेश्या प्रथा अभी भी चल रही है।

'अभागी स्त्री' के माध्यम से महादेवी जी ने एक ऐसी स्त्री का परिचय कराया है जो पतित कहीं जाने वाली माँ की पुत्री है लेकिन उसकी माँ को पतित बनाने वाला मानसिक विकलांग एवं यह विकृत समाज उसे कभी नहीं स्वीकारता है। उसे शायद पता नहीं कि बिन साध्वी स्त्री के प्रवेशपत्र के उसे समाज में प्रवेश नहीं मिलेगा। समाज के पास वह जादू की छड़ी है जिससे छुकर वह जिस स्त्री को वह सती कह देता है वह सती होने का सौभाग्य प्राप्त कर सकती है। जिसे समाज ने एक बार कुल वधुओं की पंक्ति से बाहर खड़ा कर दिया उसे अपनी भावी पीढ़ियों के साथ बाहर ही खड़ा रहना पड़ता है।

यह अभागी स्त्री डेढ़ वर्ष से बीमार पति को बचाने की पूरी कोशिश करती है परन्तु बचा नहीं पाती है। अंतिम क्षणों में पुत्र

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

का मुख देखने आए पिता ने भूलकर भी अपनी बहू की ओर दृष्टिपात नहीं किया। क्योंकि उनके मन में यह धारणा थी कि इसी के कारण उनके पुत्र को जीवन से हाथ धोना पड़ा। पडोसियों मे से जब किसी ने आकर उसकी बेहोशी दूर की, तब सब उसके मृत पति को ले जा चुके थे। रात भर वह उसी प्रकार बैठी रही, परन्तु सबेरे ससुर को जाने के लिए सामान ठीक तरे देख उसकी चेतना लौटी। आँचल से आँखें पोंछकर जब उसने किवाड़ की ओट से प्रश्न किया– कै बजे चलना है तो मानो ससुर देवता पर गाज गिरी। प्रथम आघात सहकर जब उनमें बोलने की शक्ति लौटी तब उन्होंने भी कुरतम प्रहार कियां कहा– जो लेकर अपने घर से निकली थी, वही लेकर भलमनसाहत से अपनी मां के पास लौट जाओ। नहीं तो तुम्हारे साथ हमें बुरी तरह पेश आना पड़ेगा। हमारे कुल में दाग लगाकर भी क्या तुम्हें संतोष नहीं हुआ? स्त्री ने न क्रोध किया न मान अपमान पर विचार किया। जिस घर पर उसका न्यायोचित था, उसी में पग भर भूमि की भीख मांगने के लिए अंचल फैला कर दीनता से कहा – घर में कई नौकर चाकर है मेरे लिए दो मुट्ठी आटा न होगा। मैं भी आपकी सेवा करती हुई पड़ी रहूंगी।'[6] किन्तु ससुर का उत्तर लज्जा को भी लज्जित कर देने वाला था। जो उनकी मानसिक विकलांगता का परिचय दे रहा था। उस अभागी स्त्री को अभागी बनाने वाला जो स्वयं मानसिक विकलांग है वह समाज को सही दिशा नहीं दे सकता है उसके मुंह से ऐसे कठोर वचन कदापि अच्छे नहीं लगते।

लछमा जो एक कर्मठ पहाड़ी महिला परन्तु इस समाज की मानसिक विकलांगता की शिकार है। उसके पास जमीन, खेती–बारी, गाय, भैंस सब कुछ पर्याप्त था परन्तु उसका पति पागल तो नहीं अविकसित मस्तिष्क का था। ऐसे पुत्र की परिश्रमी पत्नी लछमा को सास–ससुर तो चाहते थे पर देवर और जेठ के लिए उसकी बुद्धिमता समस्या बन जाती है। उन लोगों ने अपनी मानसिक विकलांगता का परिचय देते हुए उस पर अनेक तरह के अत्याचार करते रहे, लेकिन जब उन लोगों का अत्याचार सहकर भी जब लछमा अपने अधिकार छोड़ने के लिए तैयार नहीं हुई तो वह उन लोगों द्वारा इतनी प्रताड़ित की गई कि उसे मृत समझकर गड़ढे में फेंक दिया। वह होश में कैसे आई किस प्रकार से निकली और कैसे अपने नैहर पहुँची यह बताना कठिन है, परन्तु लछमा के माध्यम से पुरूष समाज की मानसिक विकलांगता महादेवी की रचनाओं में सभी जगह दिखाई पड़ता है, चाहे वे संस्मरण हो या रेखाचित्र या महादेवी के निबंध। शारीरिक रुप से विकलांग व्यक्ति तो इलाज से थोड़ा सुधर भी जाता है परंतु इस हीन मानसिक विकलांगता का कोई इलाज नहीं है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. स्मृति की रेखाएँ – महादेवी वर्मा – शीर्षक – बिबिया पृष्ठ 87.
2. स्मृति की रेखाएँ– महादेवी वर्मा – शीर्षक, बिबिया पृष्ठ 87.
3. अतीत के चलचित्र– महादेवी वर्मा – शीर्षक – बालिका माँ पृष्ठ 52.
4. अतीत के चलचित्र – महादेवी वर्मा – शीर्षक – बालिका माँ – पृष्ठ 53.
5. अतीत के चलचित्र – महादेवी वर्मा – शीर्षक – पृष्ठ 53.
6. अतीत के चलचित्र–महादेवी वर्मा – शीर्षक – अभागी स्त्री – पृष्ठ 67.

*****